बहमनी सल्तनत, जिसे बहमनी साम्राज्य के नाम से भी जाना जाता है, एक मध्ययुगीन मुस्लिम साम्राज्य था जिसने 14वीं सदी के अंत से 16वीं सदी की शुरुआत तक दक्षिण भारत के दक्कन क्षेत्र पर शासन किया था। यह दिल्ली सल्तनत के पतन के बाद उभरी महत्वपूर्ण सल्तनतों में से एक थी। बहमनी सल्तनत के बारे में मुख्य बातें इस प्रकार हैं:

1. संस्थापक: बहमनी सल्तनत की स्थापना 1347 ई. में दिल्ली सल्तनत के कुलीन अलाउद्दीन बहमन शाह ने की थी। उन्होंने स्वतंत्रता की घोषणा की और कर्नाटक के गुलबर्गा में अपनी राजधानी स्थापित की।

2. भौगोलिक विस्तार: बहमनी सल्तनत ने एक विशाल क्षेत्र को नियंत्रित किया जिसमें वर्तमान कर्नाटक, महाराष्ट्र, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के कुछ हिस्से शामिल थे।

3. शासक: बहमनी सल्तनत के सुल्तानों में मुहम्मद शाह प्रथम, फ़िरोज़ शाह बहमनी और महमूद शाह बहमनी जैसे उल्लेखनीय व्यक्ति शामिल थे।

4. प्रशासनिक संरचना: सल्तनत को प्रांतों में विभाजित किया गया था, प्रत्येक प्रांत एक गवर्नर के नियंत्रण में था जिसे "वली" कहा जाता था। प्रांतों को आगे जिलों में विभाजित किया गया, स्थानीय अधिकारी प्रशासन और राजस्व संग्रह की देखरेख करते थे।

5. धर्म और सहिष्णुता: बहमनी सल्तनत इस्लाम के सुन्नी संप्रदाय का अनुयायी था। इसने धार्मिक सहिष्णुता की नीति बनाए रखी, जिससे हिंदुओं सहित विभिन्न धार्मिक समुदायों के सह-अस्तित्व की अनुमति मिली। इस नीति ने क्षेत्र में सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देने में मदद की।

6. फ़ारसी प्रभाव: फ़ारसी संस्कृति, भाषा और प्रशासनिक प्रथाओं का बहमनी सल्तनत पर महत्वपूर्ण प्रभाव था। फ़ारसी आधिकारिक भाषा थी, और फ़ारसी शैली के बगीचे, वास्तुकला और कला सल्तनत की संस्कृति की प्रमुख विशेषताएं थीं।

7. कला और वास्तुकला: बहमनी सल्तनत ने दक्कन में इंडो-इस्लामिक वास्तुकला के विकास में योगदान दिया। उल्लेखनीय उदाहरणों में बीदर किला और महमूद गवन का मदरसा शामिल हैं।

8. अन्य सल्तनतों के साथ संघर्ष: बहमनी सल्तनत अक्सर पड़ोसी सल्तनतों, विशेषकर दक्षिण में विजयनगर साम्राज्य और पड़ोसी गोलकुंडा सल्तनत के साथ संघर्ष करती थी।

9. अस्वीकार: आंतरिक कलह, कुलीन गुटों के बीच विवाद और विजयनगर साम्राज्य और अन्य दक्कन सल्तनतों के बाहरी दबाव के कारण बहमनी सल्तनत का क्रमिक पतन हुआ।

10. विखंडन: 1482 में, बहमनी सल्तनत पाँच अलग-अलग सल्तनतों में विभाजित हो गई, जिन्हें डेक्कन सल्तनत या पाँच सल्तनत के नाम से जाना जाता है। ये बीजापुर, गोलकुंडा, अहमदनगर, बरार और बीदर की सल्तनत थीं।

11. विरासत: बहमनी सल्तनत ने दक्कन क्षेत्र के राजनीतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसकी विरासत में वास्तुकला, कला और दक्षिण भारत में फ़ारसी संस्कृति को बढ़ावा देने में योगदान शामिल है।

12. दक्कन के इतिहास पर प्रभाव: बहमनी सल्तनत के छोटे-छोटे सल्तनतों में विभाजन का दक्कन के इतिहास पर स्थायी प्रभाव पड़ा, क्योंकि ये उत्तराधिकारी राज्य क्षेत्र के इतिहास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे।

बहमनी सल्तनत का इतिहास मध्ययुगीन भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता और दक्कन क्षेत्र में विभिन्न समुदायों और परंपराओं के बीच संबंधों का प्रमाण है।